शाही हम्माम और जलापूर्ति व्यवस्था (1570–1658 ई॰)

शाही हम्माम जिसे गुसलखाना भी कहते थे, मूल रूप से मुगल बादशाह अकबर ने बनवाया था। शाहजहाँ ने इसका नवीनीकरण कराया। यह एक विस्तीर्ण महल है, जिसमें अष्ट्रास्र हॉल और कमरे हैं जो गलियारों द्वारा सम्बद्ध हैं। यमुना की तरफ कुछ जालीदार वातायनों के अतिरिक्त यह सब तरफ से बन्द हैं। पश्चिम की ओर सीढ़ियाँ नीचे तल पर जाती थीं जहाँ दो भट्टियाँ बनी हुई हैं। उनके ठीक ऊपर यन्त्र-कक्ष है, यन्त्र-कक्ष में भट्टियों के ऊपर पीतल और ताँबे के दो बड़े 'देग़' लगे हुए थे। यहाँ से मिट्टी और ताँबे के पाइप जो दीवारों में रहस्यमय ढंग से पैबस्त किये हुए हैं दूसरे कक्षों तक जाते हैं। कुछ कक्षों में दीवारों के कोनों में, इज़ारों की ऊँचाई पर , छोटे-छोटे कुण्ड भी छिपाकर बनाये गये थे। इसकी कार्यप्रणाली का रहस्य आज हमें मालूम नहीं है। इसकी रचना ईंट की चुनाई से हुई, किन्तु फर्शों और इज़ारों पर मूलरूप से श्वेत संगमरमर लगाया गया था। दीवारों पर चूने का प्लास्टर करके रंगीन अलंकरण हुआ था। सभी कक्ष फर्श के नीचे बनी किसी शीत व्यवस्था से सम्बद्ध थे। प्रत्येक कक्ष के ऊपर एक गुम्बदाकार छत है, जिसके शीर्ष पर एक रोशनदान बना है। इस महल के पीछे की ओर शाही उपयोग हेतु कुछ प्रसाधन कक्ष हैं। इस यन्त्र विधि से लगता है कि यहाँ किसी प्रकार की वातानुकूलन की व्यवस्था थी और इसका प्रयोग मुख्यत: ग्रीष्ममहल की तरह होता था। जैसा विदेशी यात्रियों ने लिखा है, यहाँ गोपनीय काम-काज किया जाता था। इस हम्माम की गणना मुगलों के सर्वोत्कृष्ट हमामों में होती है।

इसकी छत पर तीन गहरे तालाब हैं। इनको रहँट द्वारा नदी के जल से भरा जाता था। ये रहँट खिज़्री या जल-दरवाजे के पास चलते थे। छत पर बने इन तालाबों से पानी, मिट्टी और ताँबे के पाइपों और खुली नालियों द्वारा नगीना मस्जिद, मच्छी-भवन, शीशमहल और मुसम्मन-बुर्ज़ के फव्वारों, झरनों और तालाबों को ले जाया जाता था। यह दृष्टव्य है कि मुग़लकाल में यमुना नदी का जल पूर्णतया स्वच्छ, शुद्ध और पीने योग्य था। बादशाह शाहजहाँ भी यही जल पीते थे। समोगढ़ के युद्ध के पश्चात् औरंगज़ेब ने इस किले को घेर लिया, और नदी से यह जलापूर्ति बन्द कर दी, जिससे विवश होकर बादशाह ने 8 जून 1658 को समर्पण कर दिया। इसके बाद औरंगज़ेब ने किले के सभी दरवाज़ों की सुरक्षा के लिए उनके आगे प्रशस्त 'गढ़गज' बना दिये।

●